या अनुरागी चित की गति समुझे नाहि कोय।

ज्यों - ज्यों बड़े श्याम रंग, त्यों - त्यों उज्जवल होय॥
(बिहारी लाल)

काम क्रोध मद लोभ सब नाव नरक के पंथ।
सब परिहरि रघुवरहिं भजु, जाहि भजहिं सब संत॥
(तुलसी दास)

जो गरीब के हित करै, ते 'रहीम' बड़ लोग।
कहाँ सुदामा बापुरो, प्रेम न हाटि बिका।

राजा परजा जेहि रुचै, सीस दै सो ले जाय। (कबीरदास)